शिवनगर — अव्यक्त

रिकार्ड: - इस पाप की दुनियां... ओम शान्ति: प्रातः क्लास 3-6-67

रुहानी बच्चों ने अर्थ समझा। दुनियां में कोई भी अर्थ नही समझते। बच्चे जानते है कि हमारी आत्मा का लव परमपिता परमात्मा के साथ है। आत्मा अपने बाप परमपिता परमात्मा को पुकारती है। प्यार आत्मा मे है या दो शरीर मे? अब बाप सिखाते है कि प्यार आत्मा मे होना चाहिये शरीर तो विनाश हो जावेगा। प्यार आत्मा से है। अब बाप सिखाते है कि तुम्हारा प्यार परमात्मा बाप से होना है। शरीरो से नही। आत्मा ही अपने बाप को पुकारती है कि पुण्यात्माओं की दुनिया में ले चलो। यहां पर है पापात्मायें। परन्तु अपने को पापात्मा समझते नही है। तुम अभी समझते हो कि हम पापात्मा थे। अब फिर पुण्यात्मा बन रहे है। बाप तुमको युक्ति से पुण्यात्मा बना रहे है। बाप बनावे तब तो बच्चों को अनुभव हो कि हम अपने बाप द्वारा, बाप की याद से पवित्र, पुण्यात्मा बन रहे है। योगबल से हमारे पाप भस्म हो रहे है। बाकी गंगा आदि मे कोई पाप धोने नही जाते। मनुष्य जाकर गंगा स्नान करते है, मैल उतरती है। परन्तु उससे कोई पाप धुलते नही है। आत्मा के पाप योगबल से ही निकलते है। खाद निकलती है। यह तुम बच्चो को ही पता है। और निश्चय भी है कि हम बाबा को याद करेंगे तो हमारे पाप भी भस्म होगें। निश्चय है तो फिर पुरुषार्थ करना चाहिये नां। इस पुरुषार्थ मे माया बहुत विघ्न डालती है। रुसतम से माया भी रुसतम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी। बच्चो को हमेशा यही ख्याल रखना है कि हमको माया जीत जगत जीत बनना है। माया जीत जगत जीत का अर्थ भी कोई समझते नही है। अब तुम बच्चो को समझाया जाता है कि तुम कैसे माया पर जीत पहन सकते हो। माया भी तो समर्थ है नां। तुम बच्चो को उस्ताद मिला हुआ है। इस उस्ताद को भी नम्बरवार कोई बिरले ही जानते है। जो जानते है उनको खुशी भी रहती है तो याद भी बहुत करते है। सर्विस भी खूब करते है। अमरनाथ पर बहुत लोग जाते है। अब सभी मनुष्य कहते है कि विश्व पर शान्ति: कैसे हो? अब तुम सबको सिद्ध कर बताओ की सतयुग मे कैसे सुख था कैसे शान्ति: थी। सारे विश्व पर शान्ति: थी। और कोई धर्म ही नही था। आज से 5 000 वर्ष हुआ है उन के सतयुग था। फिर दुनी को चक्र तो जरुर लगाना है। चित्रो से तो बिलकुल हीक्लीयर बताते हो। कल्प पहले भी ऐसेही चित्र बनाये थे; दिन प्रति दिन इम्प्रूवमेन्ट बहुत होती जावेगी। कही बच्चे चित्रो मे तिथी तारिख आदि लगाना भूलजाते है। लक्ष्मी नारायण के चित्र मे तिथी तारिख जरुर होनी चाहिये। युग बच्चो की बुद्धी मे बैठा हुआ है कि हम स्वर्गवासी थे। अभी फिर बनना है। प्रदर्शनी मे भी यह समझते नां कि भारत मे ही स्वर्ग था। अभी बच्चे पैलगाम मे गये है। अमरनाथपर जाते है। उनको भी यही समझाना है कि यह भक्ति मार्ग है। इसमे रिजल्ट कुछ भी है नही। भारत मे गायन भी है ब्लाइंड फेथ देश की प्रथा। देवताओं की वा किनकी भी पुजा करते है तो अन्धश्रद्धा से। समझते कुछ भी नही है। जानते कुछ भी नही है कि हम किनकी पुजा करते है। इसीलिए फिर हमे क्या मिलेगा: सत्संग में गये वेद शास्त्र आदि सुने। फिर क्या हुआ? यह सब अन्धश्रद्धा हुई नां। श्रद्धा तो लगाई परन्तु क्या मिलेगा। वो कुछ भी पता नही है। अब तुम समझते हो कि भक्ति मार्ग से ड़ाके उतरते ही गये है। और यह भक्ति मार्ग के शास्त्र बुद्धी को पाते ही रहते है। कितने ढेर शास्त्र पढ़ते है। अंहकार कितना है कि हम तो शास्त्रों की अथारटी है! वो है भक्ति की अथारटी। तुम हो ज्ञान की अथारटी बाप द्वारा तुम ज्ञान की अथारटी बने हो। भक्ति अब खलास हो जानी है। सतयुग त्रेता मे भक्ति थोड़ेही होती होगी। बाद मे आधा कल्प भक्ति चलती है। यह भी अभी तुम बच्चो को ही समझ मे आता है। आधा कल्प बाद रावण राज्य शुरु होता है। सारा खेल तुम भारतवासियों पर ही है। 84का चक्र भी भारत मे ही है। भारत ही अविनाशी खण्ड है। यह भी आगे थोड़ेही पता था। हम भी जैसे कि उल्लू थे। अब अल्लाह बनते है। लक्ष्मी नारायण को गाड गाडेज कहा जाता है। कितना ऊंच पद है। और पढाई भी कितनी सहज है। यह 84का चक्र पुरा कर फिर हम वापस जाते है। 84का चक्र कहने ही से बुद्धी ऊपर मे चली जाती है। अब तुमको मूलवतन,

सूक्ष्म वतन स्थूल वतन सब बुधी मे याद है। आगे थोडेई जानते थे कि सूक्ष्मवतन क्या होता है। अब तुम जानते हो कि वहां कैस मूवी मे बात चीत चलती है। मूवी बाईस्कोप भी निकला था। तो तुमको समझाने मे भी बहुत सहज होता है। साईलेन्स, मूवी टाकी। तुम सब जानते हो लक्ष्मन केराज्य से लेकर यहां तक का सारा ज्ञान बुधी मे है। बाप बच्चो को समझाते है कि इस पुरानी दुनियां से ममत्व मिटाओ। मल गृहस्थ व्यवहार मे रहो बच्चो आद को सम्भालो। परन्तु बुधी बाप की ही तरफ हो। कहते है नां कम कार से बुधी बाप तरफ रहे। यही ओना लगा हुआ है कि हम पावन कैस बने। बच्चो को खिलाना पिलाना स्नान करवाना है। बुधी मे बाप कोयाद करना है। क्योकि जानते हो कि सिर पर पापों का बोझा बहुत है। इसलिये बुधी बाप से ही लगी रहे। इस माशूक को बहुत याद करना है। माशूक बाप तो सभी आत्माओ को कहते है कि मुझ बाप को याद करो। यह पॉट जो अभी चल रहा है फिर 5000वर्ष बाद चलेगा। बाप कितनी सहज युक्ति बताते है। कोई तकलीफ नही। कोईकहे कि हम तो यह कर नही सकते है। हमको तो बहुत तकलीफ भासती है। याद की यात्रा बहुत मुश्किल है। और, अरे तुम बाबा को याद नही कर सकते हो। बाप को थोडेई भूला जाता है। बाप को तो अच्छी रीती याद करना है तब विकर्म विनाश होगें। और तुम एवर हैल्दी बनेंगे। नही तो बनेंगे नही। तुमको राय बहुत अच्छी एक टिकमिलती है। एकटक दवाई होती है नां। हम गारन्टी करते है कि इस योगबल से तुम 21 जन्मो तक कब भी रोगी नही बनेंगें। सिर्फ बाप को याद करो। कितनी सहज युक्ति है। भक्ति मार्ग मे याद करते थे अणजानाई से। अब बाप बैठ समझाते है तुम भी समझते हो कल्प पहले भी वावस आपके पास आये थे। पुरूषार्थ करते थे। पक्का निश्चय हो गया है। हम ही राज्य करते थे। फिर हमने ही गंवाया है। अब फिर बाबा आया हुआ है। उनसे राज्यभाग लेना है। बाप कहते हैकि मुझे याद करो और राजाई को याद करो। मनमनाभव अन्तमते सो गते हो जायेगी। हम घर मे चले जायेंगें। अब नाटक पुरा होता है अब वापस घर मे जायेगें। बाबा आये है सबको ले जाने के लिये। जैसे घोट्र कवार को लेने लिये आते है नां। ब्राईड्स को बहुत खुशी होती है। हम अपने ससुराल जाती हूं। तुम सब सीताये हो। एक है राम। राम ही तुमको रावण की जेल से छुडा कर साथ ले जाते है। लिबरेटर एक ही है। शैतान के राज्य से लिबरेट करते है। कहते भी है कि यह शैतानी राज्य है परन्तु फिर भी यथार्थ रीती समझते नही है। अबबच्चो को समझाया जाता है समझाने के लिये बहुत अच्छी-2 पुआईन्टस दी जाती है। बाबा ने समझाया है कि लिख दो कि विश्व पर शान्ति कल्प पहले मुआफिकस्थापन हो रही है। ब्रहमा द्वारा स्थापन होय है। विश्व का राज्य था तो विश्व पर शान्ति थी नां। विष्णु को ही लक्ष्मन है यह भी कोई समझते थोडेई है। विष्णु को और लक्ष्मन को और राधा कृष्ण को अलग-2 समझते है।अब तुमने समझा है। स्वदर्शन चक्रधारी भी तुम्ही हो। शिव बाबा आकर सृष्टी चक्र का ज्ञान देते है। उन द्वारा हम भी अब मास्टर ज्ञान सागर बनते है। ज्ञान नदियां हो नां। यह तुम बच्चो के ही नाम है। भक्ति मार्ग मे मनुष्य कितने स्नान करते है, क्या-2 करते रहते है। बहुत दान पुण्य आद करते है। साहूकार लोग तो बहुत दान करते है। सोना भी दान करते है। कितना भटकते रहते है। सन्यास धर्म वालो को जावल गुरु करते है। अब हम कोई हठयोगी तो है नही। हम तो है राजयोगी। पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। फिर रावण राज्य मे अपवित्र बने है। ड्रामा अनुसार फिर बाबा पवित्र गृहस्थ आश्रम बना रहे है। और कोई बना नही सकते। सन्यासी है ही हठयोगी। यो तो गृहस्थ की निन्दा करते है। जो घरबार छोड़ते है तो उनको कोई कहते है क्या कि आप यो घरबार क्यो छोड़ते हो? और बाद दुनियां कैस चलेगी। अब तुमको क्या ऐसे-2 कहते है। क्योकि वो तो पुराने है। गये है नां। और सृष्टी इतनी बढ़ गई है।खाने के लिये अनाज भी नही है। और सृष्टी फिर क्या बढ़ावेंगे? शंकराचार्य जिसने कहा है कि चार शादी करो।उन पर तो टिका करना चाहिये।

शंकराचार्य होकर कहते है कि जैसे मुसलमान चार शादी करते है वैसे ही हिन्दुओं को भी करनी चाहिये। तो संख्या बढे नही तो मुसलमान वहुत हो जावेंगे तो जीत लेंगे। ऐसे-2 नानसेन्स वाते करते है तो ऐसे-2 को लिखना चाहिये नां कि ऐसे पवित्र आदमी होकर और क्या कहते हो। पहले तो खुद चार शादी करो। समझाना चाहिये जैसे कर्म हम करेंगे हमे देख और भी करेंगे। तो क्यो नही पहले यह शंकराचार्य ही कर्म करके दिखाते। चार शादी करकें बच्चे पैदा करकें दिखावे। फिर उनको देख कर उनके फालोवर्स भी करेंगे। परन्तु वच्चे ऐसी वाते लिखते ही कहां है। अखवार वालो से दोस्ती रखनी पडे। समझाना पड़ता है तब ही तो डालें। श्री-2-108गुरु जी ऐसी शिक्षा देते है। तुमको समझाने की मांजन बहुत है। ब्र,कु,कु को तो सब जान गये है। पत्र भी गया हुआ है। परन्तु कोई समझते थोरे ही है। जज को भी लिखा था कि यह कसम जो आप उठवाते है वो तो झूठी है। किसकी गाई हुई गीता है? गीता मे तो कृष्ण को विठा दिया है। कहते है न नां हाजर नाजर जान ~~मवीवान~~... परन्तु ~~किसी~~ हाजर नाजर है कहां? अव तुम वच्चे समझते हो कि हाजर नाजर ~~है~~। परन्तु इन आंखो से उनको देख नही सकते हो। वुधी जानती है कि बावा हम आत्माओं को पढ़ा रहे है। हाजर नाजर है। तुम ऐसे लेटर्स लिख सकते हो। आपस मे मिल कर एक कमेटी वनानी चाहिये जो कि लिखा पढ़ी करे। विश्व शान्तिः के लिये भी वाताओं की विश्व पर शान्तिः तो बाप करवा रहे है। इसके कारण ही पुरानी दुनियां का विनाश सामने खडा है। 5000वर्ष पहले भी यही विनाश हुआ था। अब भी विनाश सामने खडा है। फिर विश्व पर शान्तिः हो जावेगी। अभी तुम बच्चो की वुधी मे यह सब वाते है। सारे विश्व पर शान्तिः थी। एक भारत खण्ड के सिवाय दुसरा तो कोई खण्ड ही नही था। अभी तो कितने खण्ड है। कहते भी है भगवान कही नां कही जरूर होगा। परन्तु भगवान कौन और किसमे? यह नही जानते है। कृष्ण तो हो नही सकता। तुम अभी बैठे हो झूठ सुनाने वालो को पकड़ने। बाप कहते है झूठ मत सुनो। बाप तो मोस्ट विलवेड है नां। उनसे वर्सा मिलता है। बाप ही स्वर्ग स्थापन करते है। तो जरूर पुरानी दुनियां का विनाश भी वो ही करेंगे। त्रिमूर्ती का भी चित्र तो वहुत अच्छा है। यह भी लिख दी कि विश्व मे शान्तिः कैसे ब्रह्मा दवारा स्थापन हो रही है। शंकर दवारा विनाश। फिर विष्णु दवारा पालना होगी। तुम जानते हो कि सतयुग मे यह लक्ष्मी-नारायण थे। अब फिर अपने पुरुषार्थ से व वन रहे है। नशा रहना चाहिये नां। भारत मे राज्य करते थे। ऐसे नही कहेंगे कि शिव वावा राज्य करकें गये है। नही भारत को राज्य देकर गये थे। लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे नां। अब फिर वावा राज्य देने आये है। कहते है मीठे-2 बच्चो मुझे याद करो। और चक्र को याद करो। तुमने ही 84जन्म लिये है। ~~तुमने ही~~ जो ब्राह्मण बनेंगे। यह भी समझ लो कि कम पुरुषार्थ करते है तो इसने कम भक्ति की है। जास्ती भक्ति करते है तो पुरुषार्थ भी जास्ती करेंगे। कितना क्लीयर करकें बताते है परन्तु जब तक वुधी मे भी तो बैठे नां। तुम्हारा काम है पुरुषार्थ करना है। कम भक्ति की होगी तो योग लगेगा नही। शिव वावा की याद मे वुधी ठहरेगी नही। कब भी पुरुषार्थ मे ठण्डा नां होना चाहिये। माया को पहलवान देख कर हार्टफेल नां होना चाहिये। माया के तूफान तो वहुत आवेंगे। इस पर गीत भी है। यह भी वच्चो को समझाया है कि आत्मा ही सब कुछ करती है। शरीर तो खत्म हो जावेगा। आत्मा निकल गई। वो फिर मिलने की तो है ना फिर उनको याद कर रोने याद करने से फायदा ही क्या। वो ही चीज फिर मिलेगी क्या। आत्मा ने तो जाकर फिर दुसरा शरीर लिया। अब नेहरू की राख उड़ाते रहते है। अब उसमे रखा ही क्या है। वो क्या करकें गये है। कुछ भी नही। सब मनुष्य पापात्मा है पाप ही करते रहते है। सीढी उतरते-2 पापात्मा बनते जाते है। बनना ही है। अब तुम कितनी ऊँच कमाई करते हो। तुम्हारा जमा होता है। बाकी सबका नाये(माईनस) होता जावेगा। तुमको जितना चाहिये उतना भविष्य के लिये जमा करो। ऐसे नही कि अन्त मे जाकर कहो कि अब जमा करेंगे करो। उस लेकर हम क्या करेंगे। अभी ही काम आना है। और